B.A. Part-(1)
Paper- II
Abnormal-Psychology
By- Dr. Ramendra Kr. Singh
D.K. College, Dumraon

Dream-work and Dream-Mechanism

Question:- What do you mean by dream-work? Explain different mechanism of dream-work.

Or,

Describe with example about different mechanism of dream.

स्वप्न की दुनिया बड़ा ही अनोखी होती है। स्वप्न के दो पक्ष होते हैं — (A) व्यक्त विषय (Menifest Content)
(B) अव्यक्त विषय (Latent Content)

स्वप्न का जो विषय जो हमारे सामने होता है, उसे व्यक्त पक्ष कहते हैं। अर्थात स्वप्नदृष्टा जो कुछ भी देखता है और जागने पर जो कुछ वर्णन करता है-वह Menifest Content या व्यक्त पक्ष होता है।

व्यक्त पक्ष के विश्लेषण करने पर स्वप्न का जो अर्थ निकलता है उसे अव्यक्त पक्ष (Latent Content) कहा जाता है। यानि व्यक्त विषय के पीछे छिपा हुआ अर्थ ही अव्यक्त पक्ष है। अव्यक्त पक्ष ही स्वप्न का वास्तविक अर्थ होता है। इस तरह Dream work को समझने के लिये इसके दोनों पक्षों को समझ लेना आवश्यक हो जाता है। स्वप्न के अव्यक्त विषय में अनैतिक, कामुक इच्छाएँ रहती हैं जो अपना वेश बदलकर व्यक्त विषय में प्रकट होती हैं, और इच्छाओं की पूर्ति कर लेती है। इसके लिये कई तरह की प्रतीकों व बिम्बों और मनोरचनाओं का सहारा लेती है। सरल शब्दों में अगर कहा जाए तो स्वप्न के विषय का छद्म रूप में परिवर्तित होने की क्रिया ही Dream-work है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि स्वप्न विषय का अव्यक्त पक्ष का व्यक्त स्वप्न विषय में बदल जाना ही स्वप्न है। फ्रायड के ही शब्दों में "स्वप्न कार्य वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा स्वप्न का अव्यक्त विषय इसके व्यक्त विषय में बदल जाते हैं।" इसी तरह ब्राउन इसे परिभाषित करते हुए कहा है:—

"स्वप्न कार्य वह मनोरचना है जिसके द्वारा अव्यक्त स्वप्न विषय व्यक्त स्वप्न विषय में परिवर्तित हो जाता है।"

"Dream work is the name given by Freud to the mechanism by which latent dream thoughts are converted into the manifest contents of the dream." [Brown-1960]

ध्यातव्य है कि स्वप्न के अव्यक्त पक्ष व्यक्त पक्ष में परिवर्तित होने के लिये कुछ Mechanism का सहारा लेता है जिसे Dream mechanism कहा जाता है। फ्रायड के अनुसार ऐसे पाँच महत्वपूर्ण Dream mechanism हैं जिसके माध्यम से Dream work सम्पन्न होता है!—

(i) संक्षेपण या संक्षेपीकरण (Condensation) :— यह एक मुख्य स्वप्न रचना है। इसमें अव्यक्त विषय के अनेक तत्व व्यक्त विषय के एक तत्व के रूप में संघनित होकर व्यक्त होते हैं। यानि अव्यक्त विषय संक्षिप्त होकर व्यक्त विषय में प्रकट होते हैं। इस प्रक्रिया में अव्यक्त विषय का बहुत कुछ हिस्सा व्यक्त विषय में प्रकट होने पर छूट जाता है। वास्तव में ऐसा इसलिये होता है कि वास्तविक पहचान छिप जाए। जैसे मानलें कोई व्यक्ति ऐसा स्वप्न देखता है कि एक बूढ़ा व्यक्ति सामने खड़ा है, उसका चेहरा 'क' से मिलता है, मुँह 'ख' से मिलता है और पोशाक "ग" नामक व्यक्ति से मिलता है, शरीर घ से मिलता है, आवाज 'च' नामक व्यक्ति से मिलता है और सब मिलाकर एक विशेष व्यक्ति के रूप में दिखता है। यही संघनन एवं संक्षेपण है जिससे अव्यक्त विषय बदले रूप में संघनित होकर प्रकट होता है। रेबर एवं रेबर (1995) ने इसी अर्थ में कहा है कि "संक्षेपण एक अचेतन प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक प्रतिमाएँ संघनित होकर एक संयुक्त प्रतिमा का निर्माण करती हैं।" ऐसा Censorship के भय से बचाने के लिये होता है।

(ii) विस्थापन (Displacement) :— विस्थापन एक ऐसी मनोरचना है जिसमें व्यक्ति की अचेतन इच्छाएँ सम्बन्धित व्यक्ति या वस्तु से हटकर दूसरे व्यक्ति या वस्तु में विस्थापित होकर प्रकट होती है। असम्बन्धित वस्तु या व्यक्ति के प्रति स्वप्न में उस इच्छा का प्रकट होने पर Censor का भय नहीं रहता है क्योंकि

ऐसा होने से यह असंगत और अर्थहीन बन जाती है। इस प्रकार प्रतिबन्धक (Censor) का भय समाप्त हो जाता है और सम्बन्धित अनैतिक इच्छा की सहज ही संतुष्टि हो जाती है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है:-

(iii) प्रतीकीकरण (Symbolization):-

यह एक मुख्य मनोरचना है जिसमें अचेतन की अतृप्त इच्छाएँ अपना रूप बदलकर Symbols के रूप में प्रकट होती है और बड़ी ही सरलता से अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति कर लेती है। स्वप्न की इस मनोरचना का अधिक उपयोग व्यक्ति करते हैं ताकि Censor से बच सके। फ्रायड के अनुसार -

"अचेतन की दमित अनैतिक इच्छाएँ प्रतीकीकरण के द्वारा संतुष्ट होती है जिससे प्रतिबन्धक (Censor) के भय से बचते हुए अपनी इच्छाओं को सरलता पूर्वक पूरा कर ले।"

फ्रायड के अनुसार सभी इच्छाएँ Universal एवं Sexual होते हैं। उदाहरण के लिये एक युवक स्वप्न देखता है कि वह अपने माता पिता के साथ सीढ़ी चढ़ते चढ़ते ऊपरी मंजील पर पहुँचता है। सीढ़ी पर चढ़ने में उसे काफी आनन्द आ रहा था जैसे ही वह एक दम ऊपर पहुँचा कि उसे ज्ञात हुआ कि उसकी बहन को बच्चा होनेवाला है। फ्रायड ने उसका विश्लेषण करते हुए बताया कि—

i) सीढ़ी पर चढ़ना - Sexual intercourse का प्रतीक है।
ii) माता पिता :- Censor (प्रतिबन्धक) का प्रतीक है।
iii) बच्चा का जन्म लेना · भविष्य को लेकर चिंता है
iv) और बहन - उसकी प्रेमिका के जगह पर आई है।

पूरा स्वप्न का यह अर्थ निकला कि वह युवक एक लड़की से प्रेम करता था लेकिन माता पिता एवं अन्य सामाजिक ~~भय ही था~~ लोक-लाज एवं भय के प्रतीक प्रतिबन्धक का काम करते थे और वह युवक बेरोजगार था इसलिए भविष्य को लेकर डरता था जिससे प्रेमिका से खुलकर इजहार नहीं कर पाता है। अतः स्वप्न में Symbolic रूप से इच्छा की तृप्ति हो गई क्योंकि यह विचार अचेतन में दमित हो गई थी। फ्रायड ने इसके लिए प्रतीकों एवं उसके अर्थ भी बताये हैं - जैसे

लम्बी वस्तु (छड़ी, कलम, छाता, बैगन) - पुरुष लिंग
खोखली वस्तुएँ —— स्त्री योनि
सीढ़ी चढ़ना, तैरना, उड़ना - Sex करना

Scanned with CamScanner

(4) नाटकीकरण (Dramatization) :- नाटकीकरण वह मनोरचना है जिसमें अचेतन इच्छाएँ इस तरह नाटकीय ढंग से स्वप्न में प्रकट होती है जिससे उनका रूप विकृत हो जाती है। स्वप्न का व्यक्त विषय मूर्त (Concrete) स्वरूप का होता है। अर्थात स्वप्नदृष्टा स्वप्न देखते समय ऐसा अनुभव करता है जैसे कोई नाटक या चलचित्र देख रहा हो इसी नाटकीकरण के चलते स्वप्न का अव्यक्त विषय व्यक्त विषय में बदल जाता है। जैसे एक लड़की स्वप्न में देखती है कि वह आँधी में उड़ रही है और अंजान शहर में पहुँच जाती है। वहाँ एक युवक प्रकट होता है दोनों होटल में जाकर भरपेट भोजन करते हैं।" इसका विश्लेषण करने पर पता चला कि वह एक युवक से प्रेम करती थी और यौन इच्छा की पूर्ति चाहती थी। अतः भरपेट भोजन का स्वप्न देखी। नाटकीकरण में प्रतीक भी होता है।

⑤ गौण विस्तरण (Secondary Elaboration) :-

प्रायः हम लोग अपने स्वप्न में देखते हैं कि स्वप्न की घटनाएँ असंगत एवं अतार्किक तथा निरर्थक होती हैं। स्वप्न टूटने पर स्वप्न को सार्थक एवं तर्कयुक्त बनाकर ही प्रस्तुत करता है। इसे ही गौण विस्तरण कहा जाता है। फ्रायड का इस संदर्भ में कहना है, कि स्वप्न समाप्त होने पर स्वप्न दृष्टा अर्द्धचेतन में रहता है और इस दरम्यान इसी अवस्था में Ego अपनी ओर से इस बिखरी कड़ी में कुछ जोड़ता है और व्यवस्थित करके नये सिरे से व्यवस्थित करके नया रूप गढ़ता है। Ego किसी भी घटना को तर्कसंगत रूप में देखना चाहता है और जाग्रत अवस्था में व्यक्ति के चेतन सक्रिय रहता है। अतः अपने तर्क से जोड़ कर सुघटित एवं तर्कसंगत बना देता है। रेबर एवं रेबर (2001) "गौण विस्तरण का तात्पर्य उस प्रकृति से है, जिसमें व्यक्ति निद्रा से जगने पर अपने स्वप्नों का स्मरण करता है, अनुमान लगाता है और रिक्तियों को भरता है।"

निष्कर्ष :- इस प्रकार हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि स्वप्न की चार मुख्य मनोरचनाएँ हैं, और अंतिम गौण मनोरचना है हालांकि इनके स्वरूप में अन्तर है फिर भी एक दूसरे के पूरक हैं।

Scanned with CamScanner

सहायक है। स्वप्न रचना एवं स्वप्न कार्य को समझने के लिए स्वप्न के दोनों पक्षों Menifest Content एवं Latent Content की कार्यविधि को समझना आवश्यक है। स्वप्न कार्य वह मनोरचना है जिसके द्वारा अव्यक्त स्वप्न विषय, व्यक्त स्वप्न विषय में परिवर्तित हो जाता है। इसके लिए पाँच तरह के महत्वपूर्ण Defence Mechanism माध्यम बनते हैं।

R.K. Singh
06.05.2020
डॉ० सेन्ट्रल कु० सिंह
डी०के० कॉलेज
डुमराँव